इकाई 6 हड़प्प सभ्यता-II*

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 परिपक्व हड़प्पा सभ्यता को परिभाषित करना

6.3 आवास के प्रारूप (Settlement Patterns)

6.4 प्रमुख स्थल

- 6.4.1 सिंध में मोहनजोदड़ो
- 6.4.2 पंजाब (पाकिस्तान) में हड़प्पा
- 6.4.3 राजस्थान में कालीबंगन
- 6.4.4 हरियाणा में बनावली
- 6.4.5 गुजरात में धोलावीरा
- 6.4.6 गुजरात में लोथल

6.5 अर्थव्यवस्था

- 6.5.1 कृषि
- 6.5.2 शिल्प

6.6 जल निकासी

6.7 कला

6.8 व्यापार

6.9 समाज

6.10 धर्म

6.11 सारांश

6.12 शब्दावली

6.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.14 संदर्भ ग्रंथ

6.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम हड़प्पा सभ्यता के परिपक्व चरण, इसके अर्थ, इसकी मुख्य विशेषताओं और इससे जुड़े मुख्य स्थलों का अध्ययन करेंगे। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप निम्नलिखित के बारे में जान पाएंगे :

- हड़प्पा का परिपक्व चरण और यह प्रारंभिक हड़प्पा चरण से कैसे अलग है;
- मुख्य स्थल, उनके स्थापत्य की विशेषताएँ, नगर नियोजन, जल निकासी;
- सिंधु लिपि और इसके बीजलेखवाचन (Decipherment) की समस्याएं;
- सिंधु सभ्यता का समाज, शिल्प, व्यापार, धर्म और अर्थव्यवस्था।

* डॉ. अवंतिका शर्मा, इंद्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

6.1 प्रस्तावना

इस सभ्यता से जुड़े स्थल पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत के बड़े हिस्से में पाए जाते हैं, और इसका एक स्थल अफ़ग़ानिस्तान में है। 2008 तक खोजे गए स्थलों की कुल संख्या 1022 थी, जिनमें से 616 भारत में और 414 पाकिस्तान में हैं। इस सभ्यता का आच्छादित क्षेत्र 680,000 और 800,000 वर्ग किलोमीटर के बीच होने का अनुमान है। इसका संयुक्त क्षेत्र मिस्र और मेसोपोटामिया से लगभग 12 गुना है, अतेव यह प्राचीन दुनिया की सबसे बड़ी सभ्यता है। हम जानते हैं कि इस सभ्यता की जड़ें हड़प्पा की प्रारंभिक संस्कृतियों में हैं, जिसके बारे में आप पिछली इकाई में विस्तार से अध्ययन कर चुके हैं। आपको यह समझने की ज़रूरत है कि प्रारम्भिक हड़प्पा चरण के साथ कई विशेषताओं को साझा करने के बावजूद परिपक्व हड़प्पा काफ़ी भिन्न है। परिपक्व चरण में कई अलग-अलग संस्कृतियों के बजाय हम इस विशाल क्षेत्र में फैली एक समान सभ्यता के अस्तित्व को देखते हैं। कोई यह तर्क दे सकता है कि इतने विशाल क्षेत्र पर इस तरह का मानकीकरण और एकरूपता प्राचीन दुनिया में पूरी तरह से अद्वितीय है।

'हड़प्पा सभ्यता' या 'सिंधु सभ्यता' नाम आरंभिक दूसरी सहस्राब्दी और तीसरी सहस्राब्दी बी.सी.ई. की शहरी, साक्षर संस्कृति को संदर्भित करता है। अपनी खोज के प्रारंभिक वर्षों में कई पुरातत्वविदों ने मेसोपोटामिया की सभ्यता के साथ इस सभ्यता की तुलना करने का प्रयास किया। अब पुरातत्वविद इसके प्रति जागरूक हैं कि सिंधु सभ्यता को मेसोपोटामिया की दृष्टि की बजाय स्वतंत्र सभ्यता के रूप में अध्ययन करने की आवश्यकता है।

यहां यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि जब 'हड़प्पा सभ्यता' शब्द का उल्लेख किया जाता है तो इसका तात्पर्य शहरी चरण से है। अब हम हड़प्पा के परिपक्व चरण की मुख्य विशेषताओं पर चर्चा करते हैं।

6.2 परिपक्व हड़प्पा सभ्यता को परिभाषित करना

हड़प्पा संस्कृति का विकास एक लंबी जटिल प्रक्रिया थी। इसमें तीन चरण होते हैं : प्रारंभिक, परिपक्व और परवर्ती। प्रारंभिक चरण का पिछली इकाई में वर्णन किया गया है। यहाँ इस इकाई में हम परिपक्व चरण का अध्ययन करेंगे।

परिपक्व हड़प्पा चरण की विशिष्ट विशेषताओं में से एक उनकी कलाकृतियाँ और तकनीक है (पोश्हैल, 2003)। अब हमें एक नये प्रकार के मृदभांड (शैली, मिट्टी की बनावट, बर्तनों के रूप और चित्रकारी) मिलते हैं, यद्यपि पूर्व के साथ कुछ निरंतरताएं हो सकती हैं। धातु का उपयोग बढ़ रहा था और कांस्य की शुरुआत हो गई थी। नई धातु की वस्तुओं में बर्तन, कड़ाही, तांबे की पटियां, ब्लेड, कँटियां (Fishooks), उस्तरा और अन्य वस्तुयें शामिल हैं। पकी हुई ईंटों का उपयोग बहुत आम है और अब स्थलों के बीच मानकीकरण है। कठोर पत्थरों को छेद करने की जटिल प्रौद्योगिकी का विकास, मनका बनाने का विस्तार और रात-रतुवा (Carnelian) का व्यापक उपयोग दिखता है। इसके साथ ही, सभी स्थलों पर लेखन का उपयोग है। 4000 से अधिक सिंधु शिलालेख पाए गए हैं। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो; चोलिस्तान में गँवेरीवाला; कच्छ में धोलावीरा; और हरियाणा में राखीगढ़ी जैसे स्थल बड़ी बस्तियाँ थीं और जनसंख्या के समूह का प्रतीक थीं।

इस चरण की मुख्य विशेषता इसकी एकरूपता है। बलूचिस्तान, पंजाब या यहां तक कि गुजरात में स्थित स्थल समान रूप की संरचनाओं को दर्शातें हैं। सभी इमारतों को 1:2:4 के अनुपात वाली ईंटों का उपयोग करके बनाया गया था। वज़न और माप की एक आम

पद्धति उपयोग में थी। मुहरों के रूपांकनों में एक ही प्रकार की प्रतिमा-विद्या (Iconography) प्रदर्शित होती है। लगभग सभी स्थल अभूतपूर्व नागरिक सुविधाओं का दावा कर सकते हैं, जैसे कि स्नानगृह के साथ विशाल कमरे वाले घर, मज़बूत सड़कें, जल निकासी की विस्तृत व्यवस्था, पानी की आपूर्ति प्रणाली। हालांकि प्रभावशाली एकता के बावजूद कुछ स्थल नगरीय नियोजन और धार्मिक मान्यताओं में कुछ अंतर दिखाते हैं। इसके अलावा, कुछ क्षेत्रों को कम एकीकृत किया गया था (मैकिंतोश, 2008)। पोश्हैल (2003) का अनुमान है कि यह संक्रमण 2600-2500 बी.सी.ई. के बीच हुआ था, लेकिन हम अभी भी उन कारकों को नहीं समझते हैं जिनके कारण यह परिवर्तन हुआ।

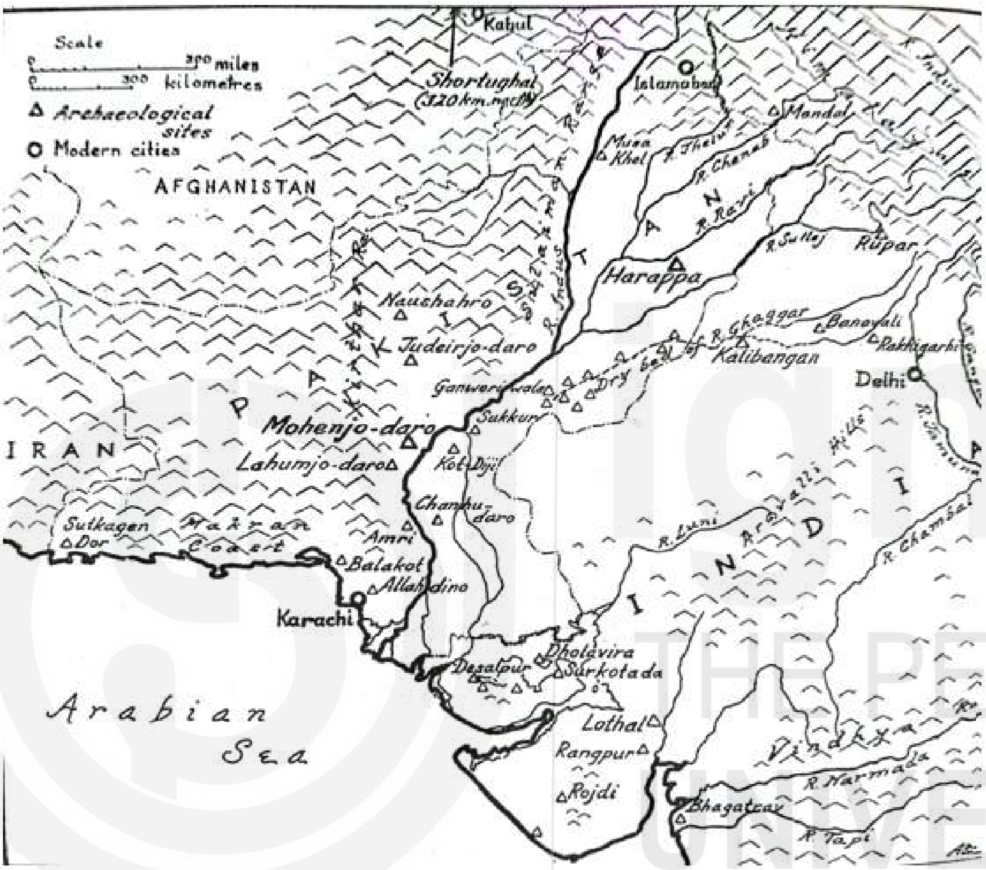

हड़प्पा सभ्यता के स्थल। स्रोत : ई.एच.आई.-02, खंड 2, इकाई 6।

6.3 आवास के प्रारूप (Settlement Patterns)

शहरी और ग्रामीण बस्तियाँ कार्यात्मक रूप से महत्वपूर्ण तरीकों से जुड़ी हुई थीं और एक प्रकार के प्रशासनिक संगठन को इंगित करती हैं। यह तथ्य कि सिंधु सभ्यता शहरी थी स्वयमेव रूप से यह संकेत नहीं देती है कि उसकी सभी बस्तियों, बड़ी और छोटी, का स्वरूप शहरी था। भोजन के लिए शहर गाँवों पर निर्भर थे और शायद श्रम के लिए भी। शहरों ने विभिन्न प्रकार के सामानों का उत्पादन किया जो कि तेज ग्रामीण-शहरी संपर्क के परिणामस्वरूप दूर-दराज के गांवों तक पहुंचे। इसके कारण पूरी सिंधु सभ्यता की संरचनाओं में एकरूपता आ गई।

विभिन्न प्रकार की बस्तियाँ मौजूद थीं। सबसे बड़ी बस्तियों में मोहनजोदड़ो (200 हेक्टेयर से अधिक), हड़प्पा (150 हेक्टेयर से अधिक), गन्वेरीवाला (81.5 हेक्टेयर से अधिक), राखीगढ़ी (80 हेक्टेयर से अधिक), धोलावीरा (लगभग 100 हेक्टेयर) शामिल हैं। हाल ही

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

में अन्वेषण के दौरान पंजाब के कुछ बहुत बड़े स्थल प्रकाश में आए हैं। ये मनसा जिले में धालेवान (150 हेक्टेयर) और भटिंडा जिले में गुरनी कलां (144 हेक्टेयर), हसनपुर II (लगभग 100 हेक्टेयर), लखमीरवाला (225 हेक्टेयर), बागलियान दा ठेह (100 हेक्टेयर) हैं। अब तक पंजाब में स्थित इन स्थलों की खुदाई नहीं की गई है। बस्तियों का दूसरा पायदान मध्यम आकार का है, जो 10-15 हेक्टेयर तक होता है। ये हैं जुदिरजोदानो और कालीबंगन। फिर 5-10 हेक्टेयर की सीमा में आने वाले छोटे स्थल भी हैं। जैसे कि आमरी, लोथल, चनहुदड़ो और रोजडी। 5 हेक्टेयर से छोटी बस्तियों में अल्लाहदीनो, सुरकोटदा, नागेश्वर, नौशारो, गाज़ीशाह शामिल हैं।

कुछ तरह की योजना सभी बस्तियों के लिए सामान्य थी। बस्ती के आकार और योजना के स्तर के बीच कोई विशुद्ध सह-संबंध नहीं था। उदाहरण के लिए, लोथल का छोटा सा स्थल उच्च स्तर की योजना प्रदर्शित करता है और कालीबंगन, हालांकि दोगुने आकार का है, नहीं।

6.4 प्रमुख स्थल

इस भाग में हम इस सभ्यता के कुछ स्थलों को लेते हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, इस चरण की मुख्य विशेषताओं में से एक इस संस्कृति में इसकी पूर्ण एकरूपता है। सिंधु, पंजाब या राजस्थान में स्थित भवन 1:2:4 के अनुपात वाली ईंटों का उपयोग करके बनाए गए थे। घर की ईंटों के आयाम 7×14×28 से.मी. थे और शहर की दीवार के लिए यह 10×20×40 से.मी. था। नगरीय योजना (town planning) में अधिकांश बस्तियों को दो क्षेत्रों में विभाजित किया गया थाः नगर-दुर्ग (Citadel) और निचला नगर। दोनों दीवार से घिरे या किलाबंद थे। नगर-दुर्ग टीले में हम अक्सर महत्वपूर्ण इमारतों और कुछ सांयोगिक निवासों को पाते हैं। अधिकांश निवास और कार्यशालाएं निचले शहर में स्थित थे। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और कालीबंगन जैसे कुछ स्थलों में निचले शहर से कुछ दूरी पर अक्सर नगर-दुर्ग का निर्माण किया गया था, जबकि अन्य स्थलों, जैसे कि बनावली, लोथल और धोलावीरा में दोनों एक ही परिसर में स्थित थे। हड़प्पा बस्तियों की सबसे प्रभावशाली विशेषताओं में से एक उनकी जल निकासी व्यवस्था है।

6.4.1 सिंध में मोहनजोदड़ो

खुदाई की जाने वाले पहली बस्तियों में से एक, मोहनजोदड़ो सिंधु नदी के पश्चिम में स्थित है। इसका विस्तार क्षेत्र लगभग 200 हेक्टेयर है। स्थल में दो टीलें हैं। एक पश्चिमी नगर-दुर्ग और दूसरा पूर्वी निचला शहर। दोनों टीले एक कृत्रिम चबूतरे पर बनाए गए हैं और इनकी किलाबंदी की गई है। इसकी आबादी लगभग 20,000 से 40,000 लोगों की आंकी गई हैं।

यहां कुछ प्रमुख इमारतों की खोज की गई थी। सबसे प्रसिद्ध एक संरचना है जिसे महान स्नानागार (The Great Bath) के रूप में जाना जाता है (चित्र 6.1)।

यह लगभग 14.5 मीटर लंबाई में, 7 मीटर चौड़ाई में और 2.4 मीटर गहराई में है। यह जिप्सम गारे (Mortar) में स्थापित ईंटों से बना है। फर्श और उस तक जाने वाली सीढ़ियों को डामर (Bitumen) की एक परत के प्रयोग के माध्यम से जलरोधक बनाया गया था। इसके अलावा, फर्श पर दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक छोटी सी प्रवेशिका नाली थी जो एक निकास नाली से जुड़ी थी। ऐसा पानी को नियमित करने के लिए किया गया था। दक्षिण की ओर जहां प्रवेश द्वार लगता था, को छोड़कर सभी तरफ़ ईंटों के स्तम्बों से स्नानागार

घिरा हुआ लगता है। स्नानागार का उद्देश्य बहस का मुद्दा है। कई लोगों के अनुसार यह अनुष्ठानिक प्रक्षालन के लिए उपयोग होता था, जबकि अन्य लोग इसे सार्वजनिक ताल मानते हैं।

महान स्नानागार से सटी कुछ संरचनाओं की पहचान 'पुरोहित परिसर' और 'अन्न-कोठार' (Granary) के रूप में की गई है। टीले के दक्षिणी किनारे पर एक चौकोर संरचना की व्याख्या 'सभा-भवन' (Assembly Hall) के रूप में की गई है जहाँ निवासी महत्वपूर्ण मामलों पर चर्चा करने के लिए एकत्रित होते थे। सामान्य तौर पर, पूर्वी टीले पर बने घरों में कमरों से घिरा एक आंगन है। कमरों की संख्या भिन्न दिखती है। दीवारों की मोटाई इंगित करती है कि कुछ घर दो मंजिला थे। छोटे घर कार्यशाला के रूप में भी कार्य कर सकते थे। अधिकांश घरों में शौचालय थे जो शहर की जल निकासी प्रणाली से अच्छी तरह से जुड़े हुए थे। पानी के लिए शहर में लगभग 700 कुएँ थे। अनेक घरों में निजी कुएँ भी थे।

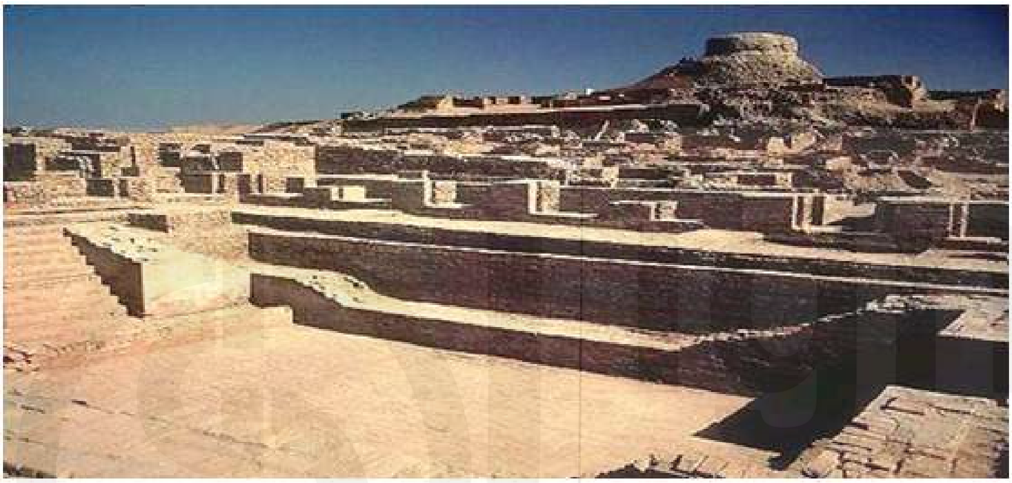

चित्र 6.1: मोहनजोदड़ो की अग्रभूमि में महान स्नानागार। साभार : एम. इमरान, इंगलिश विकिपीडिया। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://en.wikipedia.org/wiki/Great_Bath_Mohenjodaro#/media/File:Mohenjodaro_Sindh.jpeg)।

6.4.2 पंजाब (पाकिस्तान) में हड़प्पा

यह स्थल रावी नदी के सूखे नदी तल के पास स्थित है। नगर-दुर्ग क्षेत्र मोटी मिट्टी की ईंटों की दीवार से घिरा हुआ था। इसके उत्तर में एक और टीला है जिसकी व्हीलर ने एक अन्न-कोठार (granary) के रूप में पहचान की है (चित्र 6.2)। केंद्रीय गलियारे द्वारा अलग किए गए दो खंड हैं। प्रत्येक खंड में लगभग पाँच कमरे थे। आज जो दीवारें बची हैं उनमें कुछ अंतराल हैं। यह व्हीलर के अनुसार अनाज को ताज़ा रखने के लिए वायु परिसंचरण प्रदान करता था। रोमन सभ्यता के अन्न भंडारों में इसी तरह की एक समान तकनीक को अपनाया गया था। इस परिसर के दक्षिण में पकी हुई ईंटों के वृत्ताकार चबूतरों की एक श्रृंखला की खोज की गई है। वे आज भारत में पाए जाने वाले खलिहानों (threshing floors) से घनिष्ठ रूप से मिलते जुलते हैं। जले हुए गेहूं और भूसी उतारी जौ दरारों में पाए गए हैं। यह इस तथ्य की पुष्टि करता है कि यह संरचना एक अन्न-कोठार थी।

6.4.3 राजस्थान में कालीबंगन

यह स्थल अब सूख चुकी घग्गर नदी के पश्चिम में स्थित है। स्थल पर पश्चिम में एक उच्च नगर-दुर्ग का टीला और पूर्व में एक निचला आवासीय टीला भी है। अंदर, नगर-दुर्ग को एक दीवार द्वारा उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्र में विभाजित किया गया है। उत्तरी क्षेत्र में हमें कुछ घर

और एक सड़क प्राप्त हुई है। दक्षिणी क्षेत्र में कोई आवासीय संरचना नहीं है। इसके बजाय मिट्टी की ईंटों के चबूतरों की एक श्रृंखला है। चबूतरों में से एक में कुछ वेदियाँ हैं जिनमें राख, लकड़ी का कोयला और चिकनी मिट्टी का प्रस्तर पट्ट मिला है। इसके बगल में कुछ स्नान करने वाले चबूतरे हैं जो एक कड़ियोंदार नाले से जुड़े हैं। संपूर्ण परिसर एक बलि संबंधी पंथ के अभ्यास का संकेत देता है, हालांकि यह विवादित है।

पूर्वी निचले टीले के अवशेषों में भी अग्नि वेदियों की खोज की गई है। कुछ घर शायद दो मंजिला थे। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, उनके पास आग की अंडाकार वेदियाँ थीं। ये चूल्हे थे या बलि के गर्त, यह पता नहीं लगाया जा सकता है।

चित्र 6.2: हड़प्पा के एफ़ निर्धारित टीले (Mound F) में अन्न-कोठार और विशाल कक्ष (Great Hall) का दृश्य। साभार : मोहम्मद बिन नवीद। स्रोत : विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikipedia.org/wiki/File:Another view of Granary and Great Hall on Mound F.JG)।

6.4.4 हरियाणा में बनावली

यह स्थल सूखी रंगोई नदी के दाईं ओर स्थित है। यह नौ हेक्टेयर के क्षेत्र को आच्छादित करने वाली आयताकार योजना को दर्शाता है। संपूर्ण स्थल किलाबंद था। अब तक सर्वेक्षित किए गए स्थलों के विपरीत यहां का नगर-दुर्ग व निचला शहर एक ही परिसर में स्थित है। आवासों में नहाने के चबूतरे, कुएं और नालियां हैं। एक बहु-कक्षीय घर, जो मुहरों और वज़नों (seals and weights) का प्रमाण देता है, को एक 'व्यापारी के घर' के रूप में पहचाना गया है।

6.4.5 गुजरात में धोलावीरा

यह कच्छ के रण में एक द्वीप पर स्थित है। कई मायनों में, यह स्थल हड़प्पा बस्तियों में काफ़ी अनोखा है और इसकी अवस्थिति ने शायद इसकी नगरीय योजना के कई पहलुओं को प्रभावित किया। उदाहरण के लिए, ईंटों के बजाय यहां की इमारतें मुख्य रूप से स्थानीय रूप से उपलब्ध बलुआ पत्थर का उपयोग करके बनाई गई हैं। स्थल को उन व्यवस्थाओं के लिए भी जाना जाता है जो पानी के संरक्षण के लिए बनाई गई हैं (चित्र 6.3)।

चित्र 6.3ः धोलावीरा। कृत्रिम रूप से निर्मित जलाशय में पानी के स्तर तक पहुंचने के लिए निर्मित बावड़ी। साभारः ललित गज्जर। स्रोत : विकिमीडिया कॉमन्स (https://en.wikipedia.org/wiki/Dholavira#/media/File:DHOLAVIRA SITE (24). Jpg)।

शहर की योजना अनूठी है। दो के बजाय इसमें तीन निर्धारित क्षेत्र हैं : नगर-दुर्ग परिसर, मध्य शहर और एक ही किलाबंद परिसर के भीतर स्थित एक निचला शहर। प्राचीर दुर्ग क्षेत्र के कमरों में से एक में एक स्खलित सूचना पट्ट (signboard) मिला है (चित्र 6.4)। अक्षर सफेद कुलनार (Gypsum) से बने हैं और एक लकड़ी के पटल पर अंकित हैं।

चित्र 6.4ः धोलावीरा में नगर-दुर्ग के उत्तरी द्वार के पास खोजा गया सिंधु संकेताक्षरों में अंकित 'सूचना पट्ट'। साभार : सियाजकक। स्रोत : विकिमीडिया कॉमन्स (https://en.wikipedia.org/wiki/Indus_Valley_Civilisation#/media/File:The_'Ten Indus Scripts' discovered near the northern gateway of the Dholavira citadel.jpg.) ।

पानी की आवश्यकता को पूरा करने के लिए निचले शहर के निवासियों ने जलाशयों को ज़मीनी चट्टानें काट कर बनाया। लगभग 16 ऐसे जलाशयों (चित्र 6.5) की खोज की गई है।

चित्र 6.5ः धोलावीरा। साभारः रामाज़ ऐरो। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://en.wikipedia.org/wiki/Dholavira#/media/File:Dholavira1.JPG)।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

6.4.6 गुजरात में लोथल

यह हड़प्पा का एक बंदरगाह शहर है। यह सौराष्ट्र प्रायद्वीप में एक निचले दहाना (Delta) क्षेत्र में स्थित है। यह माना जाता है कि समुद्र एक समय इस स्थल के अधिक समीप था।

चित्र 6.6: लोथल बंदरगाह। स्रोत :विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikipedia.org/wiki/File:Lothal_dock.jpg)

नगर-दुर्ग और निचला शहर, दोनों एक ही परिसर के अंदर स्थित हैं। नगर-दुर्ग में एक इमारत से लगभग 65 पकी मिट्टी (Terracotta) मुहरों पर सरकंडा, बुने हुए रेशों, रस्सों और चटाई के छापों को प्राप्त किया गया है। इसका तात्पर्य यह है कि यह एक गोदाम या माल भरने का स्थान था। यह व्यापार में इस स्थल की सक्रिय भागीदारी को दर्शाता है। इसकी शहर के पूर्व में स्थित एक अन्य संरचना के द्वारा भी पुष्टि की गई है जिसे बंदरगाह के रूप में पहचाना गया है (चित्र 6.6)। यह भी एक पकाई हुई ईंटों की दीवार से घिरा हुआ है। यह पानी को नियमित करने के लिए दो प्रवेशिकाओं और निकास की नालियों (spill channels) को दर्शाता है। मदों (माल) को उतारने में मदद के लिए पश्चिम में एक अतिरिक्त चबूतरे का निर्माण किया गया था।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित स्थलों को उनकी वर्तमान भौगोलिक स्थिति से मिलाएँ :

i)	हड़प्पा	क)	राजस्थान
ii)	कालीबंगन	ख)	सिंध (पाकिस्तान)
iii)	मोहनजोदड़ो	ग)	मकरान तट (पाकिस्तान-ईरान सीमा)
iv)	सुत्कागनडोर	घ)	पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान)

2) हड़प्पा सभ्यता के दो मुख्य स्थलों की चर्चा करें।

....

....

....

....

3) आप यह कैसे सुनिश्चित करेंगे कि लोथल में पाया गया ढांचा एक बंदरगाह है?

....

....

....

....

....

6.5 अर्थव्यवस्था

हड़प्पा सभ्यता का भू-दृश्य विविधता भरा था। इसमें जलोढ़ (कछारी) मैदान, पहाड़, पठार और समुद्री तट शामिल थे। यह इलाका अधिशेष पैदा करने के लिए काफ़ी समृद्ध था जो शहरीकरण के लिए महत्वपूर्ण था। सिंधु लोगों के जीवन निर्वाह के तरीके पुनर्निर्मित करने के लिए जिन मुख्य स्रोतों का उपयोग किया जाता है वे हैं पौधों के अवशेष, जानवरों की हड्डियाँ, कलाकृतियाँ, मुहरों और मिट्टी के बर्तनों पर रूपांकन और आधुनिक क्रियाकलापों के साथ उनकी अनुरूपतायें।

एक पहलू जो प्रारंभिक हड़प्पा से परिपक्व हड़प्पा चरण को अलग करता है, वह आर्थिक गतिविधियों का पैमाना है। रीटा राइट (2010) इस अवधि को सघनता, विविधीकरण और विशेषज्ञता के चरण के रूप में देखती हैं। सघनता का अभिप्राय कृषि और शिल्प दोनों के उत्पादन में वृद्धि से है। विविधीकरण का तात्पर्य उत्पादों की एक विस्तृत विविधता का विकास है। इन दो विकासों ने विशेषज्ञता को प्रोत्साहित किया जिसका अर्थ है व्यक्तियों का एक आर्थिक गतिविधि के लिए समय समर्पित करना। उदाहरण के लिए, प्रारंभिक हड़प्पा काल में एक किसान अंशकालिक पशु चिकित्सक या अंशकालिक बुनकर भी हो सकता था। कृषि में वृद्धि का यह अभिप्राय हो सकता है कि किसान अब खेती के लिए अधिक समय और ऊर्जा समर्पित कर रहा था, अन्य गतिविधियों को वह दूसरे पूर्णकालिक विशेषज्ञों के लिए छोड़ रहा था। एक और विकास कई शिल्पों में बेहतर तकनीक को अपनाना था। आइए हम विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों का सर्वेक्षण करें।

6.5.1 कृषि

हड़प्पा सभ्यता में रबी या सर्दी की फसलों की खेती एक प्रमुख अभ्यास लगती है। मुख्य रबी फसलें गेहूँ, जौ, मटर, छोले, तिल, सरसों और मसूर थीं। ख़रीफ़ या ग्रीष्मकालीन फसलों, जैसे बाजरा और चावल, की खेती में वृद्धि इस चरण को प्रारंभिक हड़प्पा से अलग करती है (राइट, 2010)। लोथल, रोजडी, कुंटासी, सुरकोटदा और शिकारपुर जैसे कई स्थलों से बाजरा प्राप्त किया गया है। गुजरात के बाहर, इसकी खेती हड़प्पा, कुणाल और संघोल में भी की जाती थी। चावल को हड़प्पा, कुणाल, कालीबंगन, लोथल और रंगपुर से जाना जाता है।

उपयोग किए जाने वाले औज़ारों में हम बनावली और बहावलपुर से एक पकी मिट्टी (Terracotta) के हल के नमूने के बारे में जानते हैं। कालीबंगन में एक जुते हुए खेत का पता चला है। हालांकि यह प्रारंभिक हड़प्पा चरण का है, लेकिन हम निश्चित रूप से समझ सकते हैं कि यह कार्य बाद के समय में भी जारी रहा। कालीबंगन के खेतों में समकोण पर एक-दूसरे को काटते हुए हल-रेखाओं (Furrows) के समुच्चय होते थे। इस प्रकार एक जालीदार प्रारूप (grid pattern) बनता है। संभव है कि एक ही खेत में दो फसलें उगाई

जाती थीं। वर्तमान समय में सरसों और कुलथी (चने की दाल) अलग-अलग हल-रेखाओं में एक साथ उगाए जाते हैं।

कई स्थलों से तांबे की दरांतियाँ प्राप्त हुई हैं। सिंचाई तकनीकों में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्नता अवश्य रही होगी। सिंध में यह संभव है कि सिंधु में बाढ़ का उपयोग सिंचाई प्रयोजनों के लिए किया जाता था, एक तकनीक जिसे चादर-बाढ़ (Sheet-Flooding) कहा जाता है। इससे शहरों का निर्माण कृत्रिम चबूतरों पर होने वाली बात को समझा जा सकता है, ताकि उन्हें बाढ़ से बचाया जा सके। घग्गर-हकरा के लिए नहर सिंचाई का अस्तित्व प्रस्तावित किया गया है, हालांकि यह विवादास्पद है। बलूचिस्तान के शुष्क क्षेत्रों में *गबरबंद* जैसी संरचनाओं के इस्तेमाल का सुझाव दिया गया है। इन संरचनाओं का उपयोग वर्तमान क्षेत्र में पहाड़ियों के नीचे आने वाले पानी का अभिग्रहण करने या इस प्रवाह को धीमा करने के लिए किया जाता है। गुजरात में हम पहले ही धोलावीरा जैसी जगहों पर जलाशयों के अस्तित्व का उल्लेख कर चुके हैं।

स्थलों पर पाए जाने वाले पालतू जानवरों में मवेशी, भैंस, भेड़, बकरी, सुअर, ऊंट, हाथी, कुत्ता, बिल्ली, गधा और अन्य शामिल हैं। मवेशियों का मांस पंसद किया जाता था। मवेशियों और भैंस ने कृषि में मदद की होगी और भारवाहक जानवरों के रूप में सेवा दी होगी। घोड़े की उपस्थिति विवादास्पद मानी जाती है। जानवरों का शिकार एक महत्वपूर्ण गतिविधि थी। शिकार किए गए जानवरों में जंगली भैंस, हिरण, जंगली सुअर, गधा, सियार, कृंतक (चूहा, गिलहरी जैसे कतरने वाले जानवर) और खरगोश शामिल हैं। हड़प्पा के स्थल ने समुद्री कैटफिश (catfish) के सबूत दिए हैं। इसलिए ऐसा लगता है कि तटीय समुदायों ने अंतर्देशीय बस्तियों के साथ सूखी मछली का व्यापार किया होगा। भोजन संग्रहण का भी अभ्यास किया गया। गंगा-यमुना दोआब में जंगली चावल का सेवन किया जाता था। सुरकोटदा में बरामद किए गए अधिकांश बीज जंगली किस्म के हैं जिनमें बादाम (nuts), आदि घासें और तृण (weeds) शामिल हैं।

हड़प्पावासी इस प्रकार कई जीवन निर्वाह रणनीतियों पर निर्भर थे। ऐसा जोखिम को कम करने के लिए किया गया था। यदि फसलें विफल रहीं तो वे शिकार पर निर्भर हो सकते थे।

6.5.2 शिल्प

परिपक्व अवधि में शिल्प की एक विस्तृत श्रृंखला का अभ्यास किया गया था। हम पूर्ववर्ती अवधि से तकनीकी प्रक्रियाओं के संदर्भ में गहनता को देखते हैं। कच्चे माल के उपयोग की सीमा के बावजूद शिल्प उत्पादन में विस्तार किया गया। पुरातात्विक साक्ष्यों से ऐसा लगता है कि हड़प्पावासी कांस्य की तुलना में तांबे का उपयोग अधिक करते थे।

मृदभांड

हड़प्पा के शहरों में मिलने वाले मृदभांडों में सबसे सामान्य लाल बर्तन हैं। ये पहिये पर बने और पके मृदभांड हैं। इसमें सादे और सजाये हुए बर्तन हैं। चित्रों के लिए लाल रंग का उत्पादन करने के लिए गेरू का उपयोग किया गया था और काले मैंगनीज़ (Manganese) के साथ गहरे लाल-भूरे रंग के लोहे के ऑक्साइड को मिलाकर काले रंग को प्रदर्शित किया गया था। चित्रकला या रूपांकनों को काले रंग में बनाया जाता था और ज़्यादातर में ज्यामितीय या प्राकृतिक रेखाचित्र (designs) हैं। इनमें पीपल की पत्तियां, मछली के शल्क और अंतर्निभाजित वृत्त शामिल हैं जो प्रारंभिक हड़प्पा चरण से जारी रहे। मृदभांड साधार तश्तरी (dish-on-stand), एस रेखाचित्र (S-profile) नुमा फूलदान, घुंडी सजावट वाले

छोटे बर्तन, नुकीले आधार पर टिके प्याले जैसी आकृतियों में हैं। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, नौशारो और चनहुदड़ो में मृदभांडों की भट्टियाँ पाए गई हैं।

धातुकर्म

हड़प्पा वासियों को तांबा, सोना और चांदी धातु कर्म के बारे में पता था। तांबे का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था और यह हथियारों के रूप में हैं। तांबे का प्रयोग कृषि उपकरणों जैसे दरांती, बढ़ईगिरी के उपकरण जैसे छेनी और आभूषणों जैसे सुरमासिलाइयों, अंगूठियों, चूड़ियों, कर्णफूलों और विविध प्रकार की वस्तुओं जैसे मछली पकड़ने वाले कांटों, सुइयों, तवा (scale-pan) और मूर्तियों के रूप में भी मिलता है (चित्र 6.7)। कई बार, इसके विभिन्न संयोजनों से क़लई/राँगा (Tin), शंखिया (Arsenic), सीसा, गिलट (Nickel) और जस्ता जैसी मिश्रधातुएं बनायी जाती थीं। इन वस्तुओं के अध्ययन से पता चलता है कि हड़प्पा वासियों को लोहारी, ग़रकी (Sinking), धातु को गरम या ठंडा करके जोड़ना (hot and cold welding) जैसी तकनीकें पता थीं। वस्तुओं को ज़्यादातर पॉलिश किया गया है। लोथल में 16 तांबे की भट्टियाँ मिली हैं। मोहनजोदड़ो के एक ईंटों से बने गड्ढे में बड़ी मात्रा में कॉपर ऑक्साइड की खोज की गई है।

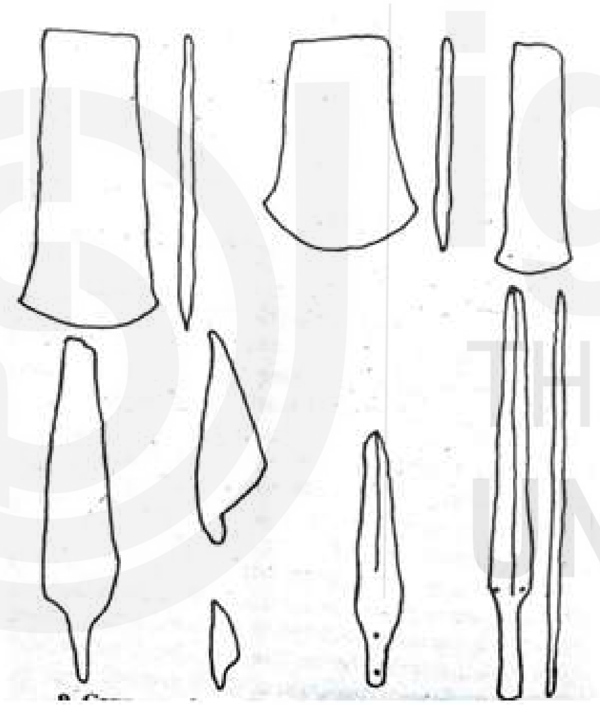

चित्र 6.7: हड़प्पा वासियों द्वारा प्रयुक्त तांबे और कांस्य के उपकरण। स्रोतः ई.एच.आई.-02, खंड 2, इकाई 6।

इनके अलावा, हड़प्पावासी सोने और चांदी के आभूषणों का भी निर्माण करते थे। इन्हें मोहनजोदड़ो, हड़प्पा और अल्लाहदीनों से प्राप्त किया गया है।

मनका उत्पादन

हड़प्पा वासियों द्वारा निर्मित सबसे प्रसिद्ध कलाकृतियाँ उनके मनके थे। इनमें कुछ, जैसे इंद्रगोप (Carnelian) के मनके, निर्यात की एक महत्वपूर्ण वस्तु थे। कीमती धातुओं के मनकों और अर्ध-कीमती पत्थरों जैसे गोमेद (Agate), सूर्यकांत मणि (Jasper), शैलखटी (Stealite) और लाजवर्द (Lapis-Lazuli) के मनके बनाने की जानकारी उपलब्ध थी। हमारे पास पकी मिट्टी (Terracotta), हड्डी, प्रकाचित मिट्टी (Faience) और सीप के मनके भी

हैं। परिपक्व चरण में सबसे महत्वपूर्ण विकास कठोर अर्ध-कीमती पत्थरों को छिद्रित करने के लिए सख़्त बेधनी (hard drill) का उपयोग था (पोश्हैल, 2003)। अन्य तकनीकों में शामिल था अपेक्षित आकार के लिए सामग्री का शल्कन (flaking) और चीरना (sawing) और उसे सही रंग प्रदान करने के लिए गर्म करना। प्रसिद्ध 36 लंबे, बेलनाकार, नलीदार इंद्रगोप (Carnelian) से बने मनकों के उत्पादन में 480 दिल लग सकते थे। इसका तात्पर्य है कि यह शिल्प एक अति विशिष्ट गतिविधि थी। मोहनजोदड़ो, चुनहुदड़ो और लोथल से मनके बनाने की कार्यशालाएँ बरामद हुई हैं।

मिट्टी की प्रकाचित वस्तुयें (Faience)

कई हड़प्पा स्थलों से मनकों, चूड़ियों, कर्णफूलों, मूर्तियों के रूप में प्रकाचित मिट्टी की अनेक वस्तुओं को प्राप्त किया गया है। ये बिल्लौर (Quartz) नामक चमकीले पत्थर से निर्मित एक कृत्रिम सामग्री से बनी हैं। इसकी तकनीक की जटिलता को देखते हुए केनोयर (2000) ने इसे समाज के अभिजात/उत्कृष्ट वर्ग के उपयोग की वस्तु कहा है।

पत्थर (Stoneware) की चुड़ियाँ

केनोयर के अनुसार यह एक अति विशिष्ट वस्तु है जो शासक वर्ग के साथ निकटता से जुड़ी हो सकती है। कुछ कारणों से, इन चूड़ियों की खोज केवल पाकिस्तान के स्थलों से की गई है। ये स्थल हैं : मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, बालाकोट और नौशारो। पत्थर के पात्र (Stoneware) शब्द भ्रामक हैं क्योंकि वस्तुयें पत्थर की नहीं बल्कि पकी मिट्टी (Terracotta) की बनी हैं। बारीक गुंदी मिट्टी को 1050-1100 डिग्री तक के उच्च तापमान पर गरम किया गया था। इन्हें अभिजात वर्ग की माना जाता है और यह इनकी खोज की प्रकृति के कारण है। इन्हें सिंधु मुहरों से सील किए गए विशेष कनस्तरों में प्राप्त किया गया है। अन्य चूड़ियों के विपरीत, ये अभिलेखित हैं या इन्हें कुम्हारों द्वारा चिन्हित किया गया है। दिलीप चक्रबर्ती (2006), हालांकि, बताते हैं कि नौशारो जैसे छोटे स्थलों में इनका मिलना कुलीन वर्ग के साथ जुड़े होने के इस दावे का समर्थन नहीं कर सकता।

पाषाण उपकरण उद्योग

धातुओं के आगमन से पत्थर के औज़ारों का अंत नहीं दिखता। हड़प्पावासी पत्थर के ब्लेडों और छोटे, सूक्ष्म ब्लेडों का इस्तेमाल करते रहे। बिल्लौर (Chert) एक महत्वपूर्ण कच्चा माल बना रहा। इन्हें बनाने वाली कई कार्यशालाएँ उत्तरी सिंध में सुक्कुर-रोहड़ी पहाड़ियों के पास स्थित थीं। प्रत्येक कार्यशाला में एक विशेष कार्य होता था। कुछ निर्मित ब्लेड 8 से.मी. और उससे भी लंबे थे। दूसरों ने उन्हें छोटे, सूक्ष्म ब्लेडों (bladelets) में बदलने के लिए अपशिष्ट मूल भाग (Core) पर काम किया। सिंध के अलावा, गुजरात में लोथल जैसे स्थल भी स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पत्थर के ब्लेडों का निर्माण करते रहे (चित्र 6.8)।

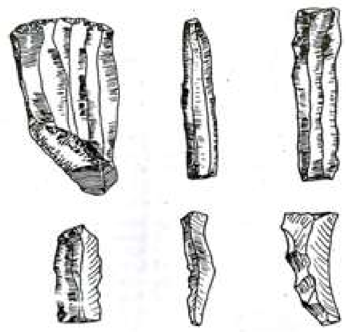

चित्र 6.8: पाषाण ब्लेड औज़ार (मोहनजोदड़ो)। स्रोत : ई.एच.आई.-02, खंड 2, इकाई 6।

सीप प्रौद्योगिकी (Shell-Processing)

चूड़ियों, करछुल, चम्मचों, जड़ने के टुकड़ों, सजावटी वस्तुओं की एक विस्तृत विविधता सिंधु स्थलों से प्राप्त की गई है। ये मकरान, कच्छ और खंभात तटों में शंख से निर्मित हैं। ये मकरान तट से बड़ी सीपियों (clam shells) और कच्छ और शायद ओमान से चाइकोरियस सीप (Chicoreus) और फ़ासियोलारिया सीप (Fasciolaria) से बने पाए गए हैं। सीप की वस्तुओं का निर्माण बालाकोट, नागेश्वर और कुंतासी में किया जाता था, वहीं कुछ कार्यशालाओं को हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे आंतरिक स्थलों में भी खोजा गया है। इसका तात्पर्य यह है कि कच्चे रूप में सीप अत्यधिक मूल्यवान था और एक महत्वपूर्ण व्यापार वस्तु था (राइट, 2010)।

शैलखटी (Stealite)

शैलखटी का उपयोग मुख्य रूप से मुहरों (seals) के निर्माण में किया जाता था (चित्र 6.9)।

चित्र 6.9: हड़प्पा की मुहरें। साभार : वर्ल्ड इमेजिंग। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:IndusValleySeals.JPG)।

मुहरें बनाने की कार्यशालाएं हड़प्पा और लोथल से जानी जाती हैं (लाहिड़ी, 1992)। छोटे जानवरों जैसे छोटे सींग वाले बैल, भैंस, बैल, गैंडे, बाघ, मगरमच्छ को मुहरों पर चित्रित किया गया है। हमें कल्पित जानवरों का चित्रण भी मिलता है, जैसे एक सींग वाला पशु (Unicorn), सींग वाला बाघ, सींग वाला हाथी। जबकि अधिकांश नमूने चौकोर हैं, लगभग 10 प्रतिशत आयताकार पाए गए हैं। हम मुहरों के प्रयोग के बारे में संक्षेप में टिप्पणी कर सकते हैं। समकालीन सभ्यता में, लंबी दूरी के व्यापार पर माल सुरक्षित करने के लिए मुहरों का उपयोग किया जाता है। सील किए गए गट्ठरों को केवल गंतव्य पर खोला जा सकता था, जो सामान को छेड़छाड़ से बचाता था। लोथल में अनेक मुहरें गोदाम में मिली हैं। यह इंगित करता है कि सिंधु मुहरों का एक समान उद्देश्य था। मनकों के उत्पादन में भी शैलखटी का उपयोग किया जाता था। मुख्य कार्यशालाएं नौशारो, मोहनजोदड़ो और चनहुदड़ो में स्थित थीं (लाहिड़ी, 1992)।

भार और मापतौल

हड़प्पावासी भार और माप की एक मानकीकृत पद्धति का उपयोग करते थे। अधिकांश माप घनाकार (cubical) थे और बिल्लौर (Chert) से बने थे। हमारे पास उत्कृष्ट गोमेद (Agate) और सूर्यकांत मणि (Jasper) से बने कुछ नमूने भी हैं। वज़न 0.871 ग्राम के एक से चौसठ

गुणकों के रूप में बढ़ते थे। रैखिक माप के लिए हमें मोहनजोदड़ो, लोथल और हड़प्पा से सीप, हाथी दांत और तांबे से बने मापकों (scales) के बारे में पता चलता है।

6.6 जल निकासी

हड़प्पा बस्तियों की सबसे प्रभावशाली विशेषताओं में से एक उनकी जल निकासी व्यवस्था है। हड़प्पा, कालीबंगन, नौशारो, चनहुदड़ो, अल्लाहदीनो, धोलावीरा, लोथल, मोहनजोदड़ो जैसे स्थलों ने विस्तृत जल निकासी सुविधाओं के प्रमाण दिए हैं। विस्तृत जल निकासी पद्धति की विशिष्ट विशेषताओं में घरों के अंदर अपशिष्ट जल के प्रबंधन, भीतरी नालियों, दीवारों में ऊर्ध्वाधर नालियों, दीवारों से होकर गुज़रती और गलियों में खुलती नालियों, गुसलखानों से निकलती और बाहरी सड़कों तक जाती नालियों आदि को शामिल किया गया है (पोश्हैल, 2003)। सभी स्थलों पर गलियों की नालियाँ पकी हुई ईंटों से बनी थीं। अल्लाहदीनो में पाई गई नालियाँ पत्थर की हैं। हमारे पास मोहनजोदड़ो में नालियों के तल में कुलनार (Gypsum) और चूने के लेप के उपयोग के भी सबूत हैं। वास्तव में, मोहनजोदड़ो में प्रारंभिक हड़प्पा काल और संक्रमणकालीन चरण, दोनों की वैशिष्ट्य नालियां पाई गई हैं। प्रत्येक निर्माण अवधि के दौरान नालियों को ऊँचा उठाया गया।

अधिकतर नालियाँ ईंट या पत्थर से ढकी हुई थीं। अपरिष्कृत तलछट को नालियों में जाने से रोकने के लिए जल निकासी प्रणाली में छोटे-छोटे तलछट ताल और जाल बनाए गए थे। इस तलछट को समय-समय पर एकत्रित किया जाता था।

घरों में आमतौर पर स्नानागार बनाए जाते थे। चबूतरे की ढलान, फर्श पर ईंटें, चबूतरे के चारों ओर उठाई गई किनारी (rim), फर्श को प्रदान की गई निर्बाध परिसज्जा, चूने के लेप की परत और ईंट की धूल का उपयोग, सभी इन स्नानगृहों को बनाने में बरती गई अत्यंत सावधानी का संकेत देते हैं।

6.7 कला

अपने समकालीनों की तुलना में सिंधु सभ्यता कला में विशेष रूप से समृद्ध नहीं है। हमने कुछ मानव और पशुओं की लघुमूर्तियों को बरामद किया है। अधिकांश मानव लघुमूर्तियाँ हस्तनिर्मित थीं और कांस्य, पकी मिट्टी (Terracotta), शैलखटी और प्रकाचित मिट्टी (Faience) से बनाई गई थीं। हमारे पास पुरुष और स्त्री दोनों की लघुमूर्तियाँ हैं जिनमें से कुछ के लिंग की पहचान नहीं हो पा रही है। स्त्री की मूर्तियों को विस्तृत आभूषणों और केश सज्जा के साथ बनाया गया है। इनमें से अनेक हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और बनावली से प्राप्त की गई हैं। लोथल में कुछ अपरिष्कृत नमूनों की खोज की गई है। सबसे प्रसिद्ध एक कांस्य लघुमूर्ति है जिसे नर्तकी ('Dancing Girl') कहा जाता है। इसकी लंबाई लगभग 11.25 से.मी. है। इसमें एक इकहरी स्त्री को दर्शाया गया है जिसका एक हाथ उसके बायें घुटने के थोड़ा ऊपर और दूसरा उसके कूल्हे पर टिका हुआ है। बायां हाथ पूरी तरह से चूड़ियों से ढका हुआ है जबकि दाएं में केवल चार कंगन हैं। वह तीन लोलकों वाला एक हार भी पहने हुये है। उसकी आँखें आधी बंद हैं और बाल एक जूड़े में बंधे हैं (चित्र 6.10)। उसकी भंगिमा से किसी भी नृत्य मुद्रा का संकेत नहीं मिलता है, लेकिन जॉन मार्शल द्वारा उसे 'Dancing Girl' का नाम दिया गया क्योंकि उसने उसे नृर्तकियों/नृत्य बालाओं की याद दिलाई। एक अन्य महत्वपूर्ण मूर्ति पुरोहित-राजा की है (चित्र 6.11)। यह एक पुरुष की मूर्ति है, जिसकी ऊंचाई लगभग सात इंच है। नाक की नोक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, आकृति की आंखें आधी बंद हैं। उसने तिपतिये रेखाचित्र से सजाया हुआ एक दुशाला पहना है जो

उसके सीने और बाएं कंधे को ढकता है। हमने अनेक स्थलों से जानवरों की मूर्तियाँ भी खोजी हैं। ये खिलौनों के रूप में इस्तेमाल की जाती होंगी। इनमें से कुछ ताबीज या आभूषण हो सकते हैं (जॉन मार्शल, 1931)।

चित्र 6.10: मोहनजोदड़ो की 'Dancing Girl'। साभार : अैल्फ्रेड नौराथ। स्रोत : विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:The_Dancing_Girl,_in_a_photogravure_by_Alfred_Nawrath,1938.jpg)।

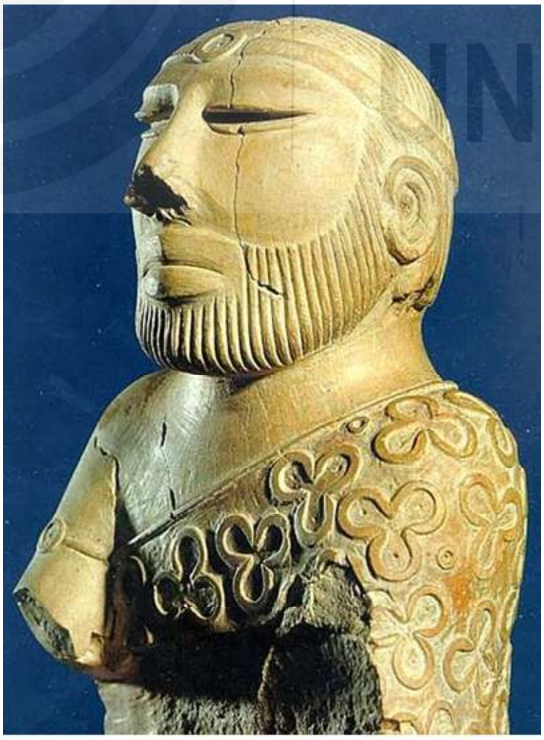

चित्र 6.11: 'पुरोहित-राजा', मोहनजोदड़ो। राष्ट्रीय संग्रहालय, कराची, पाकिस्तान। साभार : मैमून मेंगल। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://en.wikipedia.org/wiki/File:Mohenjo-daro_Priesterk%C3%B6nig.jpeg)।

6.8 व्यापार

आंतरिक व्यापार

हड़प्पा व्यापार वस्तु विनिमय पर आधारित था। विभिन्न प्रकार के सामानों का व्यापार किया जाता था। मकरान और कच्छ तट जैसे सुदूर क्षेत्रों से चूड़ियाँ बनाने के लिए शंख हड़प्पा लाया जाता था। सुक्कुर-रोहड़ी की पहाड़ियों के अनेक स्थलों से बिल्लौर (Chert) से बने ब्लेड प्राप्त हुये हैं। इसके अलावा, मुहरों और वज़न करने की समरूप/एकरूप पद्धति से एक नियमित आंतरिक व्यापार तंत्र के अस्तित्व का संकेत मिलता है। वास्तविक व्यापार मार्गों का अनुमान केवल कच्चे माल के स्रोतों और स्थलों की अविस्थिति समझ कर ही लगाया जा सकता है। नयनजोत लाहिड़ी (1992) के अनुसार, बलूचिस्तान ने दक्षिणी सिंध के रास्ते से हड़प्पा शहरों को तांबा, सीसा, सूर्यकांत मणि, गोमेद और शिलाजीत की आपूर्ति की। हड़प्पा स्थलों और प्राप्त सामग्री के स्थान से हम तीन मार्गों का पता लगा सकते हैं : मूला (Mula) दर्रा, सिंध के कोहिस्तान में स्थित दर्रे और बलूचिस्तान में सुत्कागनडोर और शाही टम्प (Shahi Tump) को बालाकोट सिंध के साथ जोड़ने वाला एक तटीय मार्ग।

सिंध के स्थलों ने पंजाब के स्थलों को सीप/शंख और चकमक पत्थर (Flint) जैसी सामग्री की आपूर्ति की। यह व्यापार शायद सिंधु नदी पर होता था। हड़प्पा स्थलों के फैलाव से हम कराची जिले से मुल्तान होते हुए लरकाना जिले और सुक्कुर-रोहड़ी की पहाड़ियों तक जा रहे एक स्थल मार्ग का अनुमान लगा सकते हैं। पंजाब, दूसरी तरफ, राजस्थान, हरियाणा, बलूचिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान में कई स्थलों से जुड़ा हुआ था। दो व्यापार मार्गों ने राजस्थान को पंजाब से जोड़ा। पहला, एक भूमि-नदी मार्ग ने मुल्तान को दक्षिणी राजस्थान से बहावलपुर, अनूपगढ़, महाजन, लूणकरणसर, बीकानेर और जयपुर के रास्ते से सतलुज और घग्गर-हकरा के घाटों पर नौकाओं द्वारा जोड़ा। दूसरा, पूगल (Pugal/Poogal) के रास्ते से मुल्तान को बीकानेर से एक भूमि मार्ग जोड़ता था। राजस्थान ने शेष स्थलों को सोना, चाँदी, सीसा, अर्ध-कीमती रत्न और तांबा प्रदान किया और बदले में बिल्लौर और सीप प्राप्त किए। दो भूमि मार्ग हरियाणा को पंजाब से जोड़ते थे : ऊपरी सतलुज क्षेत्र से गुज़रता एक रास्ता बहावलपुर को जोड़ता था और दूसरा मध्य पंजाब में घग्गर-दृशद्वती विभाजक क्षेत्र से गुज़रता था। इस प्रकार, उन्होंने राजस्थान से तांबा, चांदी, पन्ना और अर्ध-कीमती रत्नों का अधिग्रहण किया और सिंध से सीप और चकमक पत्थर प्राप्त किए। पंजाब भी बलूचिस्तान से सॉल्ट रेंज, चिनिओट, किराना (Kirana) और ढाक (Dhak) जैसे पहाड़ी बाहरी इलाकों के माध्यम से भी जुड़ा था। ये पहाड़ियाँ कच्चे माल जैसे शैलखटी, कुलनार, सूर्यकांत मणि, चूना पत्थर, स्लेट, ग्रेनाइट, बाजालत/असिताष्म (Basalt), संगमरमर, क्वार्टज़ाइट, बलुआ पत्थर, *एबरी,* तांबा, सीसा, सोना और हेमाटाइट से समृद्ध हैं। एक अन्य मार्ग सिंधु नदी का अनुगमन करता था। यह हड़प्पा को गुमला नामक स्थल से जोड़ता था और यहाँ से मध्य एशिया के स्थलों तक जाता था।

बाहरी व्यापार

सिंधु सभ्यता ने समकालीन सभ्यताओं के साथ अन्तःक्रिया और वस्तुओं का विनिमय किया होगा। पश्चिम एशिया के अनेक स्थलों से कई सिंधु कलाकृतियों की खोज की गई है।

मेसोपोटामिया के शहरों के लिए एक महत्वपूर्ण निर्यात वस्तु इंद्रगोप से बने लंबे, बेलनाकार, नलीदार मनके और इंद्रगोप के नक्काशी किए गए मनके थे। उर में इन्हें 2600 बी.सी.ई. के आसपास की शाही कब्रों से प्राप्त किया गया है। उर, किश (Kish), निप्पुर (Nippur),

अस्सुर (Assur) और टेल असमर (Tell Asmar) से भी नक्काशीदार इंद्रगोप मनकों की खोज की गई है। इसके अलावा, सिंधु की और सिंधु जैसी मुहरों की प्राप्ति भी व्यापार के अस्तित्व का समर्थन करती है। किश, लगाश (Lagash), निप्पुर, टेल असमर, टेप गावरा (Tepe Gawra), उर से मुहरें प्राप्त की गई हैं। उर से एक सिंधु बाट प्राप्त किया गया है और टेप गावरा और अल हिबा से हमने एक सिंधु पासा बरामद किया है।

राजा सारगोन (Sargon) के समय (2334-2279 बी.सी.ई.) के मेसोपोटामियन ग्रंथ हमें दिलमुन, मगन (Magan) और मेलूहा के साथ व्यापारिक संबंधों के बारे में बताते हैं। दिलमुन की पहचान बहरीन और मगन की पहचान मकरान तट के साथ की जाती है। मेलूहा की पहचान पर कुछ विवाद हैं। ये ग्रंथ हमें मेलूहा के जहाजों के बारे में बताते हैं जो तांबा, क़लई/राँगा, लाजर्वद, इंद्रगोप, आबनूस, सोना, चांदी, हाथी दांत, शहतूत की लकड़ी, सिसो (Sisso) और खजूर लाते थे। यह स्पष्ट नहीं है कि मेलूहा हड़प्पा को संदर्भित करता है या नहीं। डी. के. चक्रबर्ती का तर्क है कि इनमें जिस प्रकार की वस्तुओं का उल्लेख शामिल है 'मेलूहा' शब्द हड़प्पा सभ्यता के बजाय मेसोपोटामिया के पूर्व के क्षेत्रों को संदर्भित करता है।

मेसोपोटामिया के अलावा, बहरीन, फ़ैलका (Failaka), शारजाह और ओमान प्रायद्वीप जैसे खाड़ी क्षेत्रों में स्थित स्थलों ने हमें सिंधु की या सिंधु-प्रेरित वस्तुएं दी हैं। रस-अल-क़ला (Ras-al-Qala), हमद (Hamad), हज्जर (Hajjar), फ़ैलका में सिंधु सकेताक्षरों वाली मुहरें पाई गई हैं। टेल अबरक़ से संभवतः किसी हड़प्पा स्थल में बनी हाथी दांत की कंघी मिली है। ओमान में, रस-अल-जुनायज़ (Ras-al-Junayaz) ने हड़प्पा वस्तुओं की विविधता के साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं। अभिलेखित ठीकरा, शैलखटी की मुहरें, डामर (Bitumen) की परत से लेपित लकड़ी व हाथी दांत से बनी कंघी। तुर्कमेनिया में, अल्तीन टेपे (Altyn Tepe) और नमाज़गा (Namazga) के स्थलों से सिंधु से संबंधित वस्तुयें प्राप्त हुई हैं। अल्तीन टेपे से Soapstone/सिलखड़ी (Ablaster) से बनी एक चौकोर मुहर प्राप्त हुई है जिस पर सिंधु चित्रलेख अंकित हैं। नमाज़गा से हडप्पा सभ्यता में खोजी गई आकृति के समान ही पकी मिट्टी (Terracotta) की एक महालिंगी (ithyphallic) कलाकृति को प्राप्त किया गया है।

उत्तर और दक्षिण ईरान के स्थलों को इंद्रगोप से बने मनकों का निर्यात किया जाता था। उन्हें उत्तरी ईरान के हिसार, शाह टेपे और मर्लिक (Marlik) और शहदाद, टेपे यहया, जलालाबाद और कल्लेह निसार (Kalleh Nisar) से प्राप्त किया गया है। इसके अलावा, टेपे यहया से भी सिंधु मुहर लगा एक ठीकरा (sherd) और 2320 बी.सी.ई. में दिनांकित कमल मुद्रा में बैठे एक व्यक्ति को दर्शाती पकी मिट्टी (Terracotta) की एक वस्तु प्राप्त हुई है। कल्लेह निसार से तीन सिंधु जैसी मुहरें प्राप्त हुई हैं। सूसा (Susa) से सिंधु चिह्नों को दर्शाती एक बेलनाकार और एक वृत्ताकार मुहर प्राप्त हुई है। शहर-ए-सोख्ता (Shahr-i-Sokhta) में गुजरात तट से प्राप्त ज़ैनकस्पीरम (Xancuspyrum) शंखों की खोज की गई है।

पश्चिम एशिया के अलावा, हड़प्पा के अफ़ग़ानिस्तान और मध्य एशिया के साथ भी व्यापारिक संपर्क थे। अफ़ग़ानिस्तान से प्राप्त लाजवर्द और मध्य एशिया से प्राप्त क़लई बहुत मूल्यवान थे। अफ़ग़ानिस्तान में शोरतुघई नामक स्थल संभवतः इस व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए स्थापित किया गया था। उत्तरी अफ़ग़ानिस्तान में डैशली (Dashly) 3 जैसे कुछ स्थलों ने हमें हड़प्पा के साथ संपर्क के प्रमाण दिए हैं। इस स्थल पर स्थित महल से हमने सिंधु जैसे तिपतिये रूपांकनों वाले पुरावशेषों, सिलखड़ी पत्तरों पर अंकित कूबड़ वाले बैल और शैलखटी से बने वृक्काकार फूलदानों आदि कलाकृतियों की खोज की है।

6.9 समाज

पुरातात्विक साक्ष्यों से हड़प्पा समाज की रचना बिल्कुल स्पष्ट है। आर्थिक गतिविधियों से हम समाज में विभिन्न शिल्प विशेषज्ञों, व्यापारियों और किसानों की उपस्थिति का अनुमान लगा सकते हैं। किलो, अन्नभंडारों जैसी महत्वपूर्ण इमारतों का निर्माण एक श्रमिक वर्ग के अस्तित्व को इंगित करता है। मुहरों की उपस्थिति, कलाकृतियों का मानकीकरण, एक समान तौल का उपयोग एक शासक वर्ग के अस्तित्व को इंगित करता है जिसने विभिन्न आर्थिक गतिविधियों को विनियमित किया। हालांकि हड़प्पा धर्म की प्रकृति पर बहस जारी है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक पुरोहित वर्ग मौजूद था।

शासक

हड़प्पा राजनीतिक व्यवस्था पर बहस में कई मुद्दे शामिल हैं। क्या इसमें एक ही साम्राज्य था? क्या अलग-अलग राज्य थे जो एक सामान्य विचारधारा का पालन कर रहे थे? किस तरह के शासकों का अस्तित्व थाः निरंकुश या समष्टिगत? क्या सभ्यता एक राज्य या एक मुखियातंत्र के स्तर पर थी?

एक मत व्हीलर (1947) और स्टुअर्ट पिग्गौट का है। पिग्गौट कहते हैं कि यह एक ऐसा साम्राज्य था जो एक कुशल नौकरशाही द्वारा समर्थित निरंकुश पुरोहित-राजाओं द्वारा शासित था। किन्तु डब्ल्यू. फेयरसर्विस (1961, 1967) का मानना है कि केन्द्रीकृत शासन को सैन्य प्रवर्तन और एक स्थायी सेना की आवश्यकता होती है। हड़प्पा शहरों में सैन्य चरित्र का अभाव है। इसके बजाय, शहरों की प्रभावशाली एकरूपता एक धार्मिक विचारधारा के कारण हो सकती है। एस. सी. मलिक इससे सहमत हैं। हालाँकि अन्य विद्वानों का मानना है कि यह एकरूपता एक राजनीतिक प्राधिकरण की तुलना में आंतरिक व्यापार की ज़रूरतों के माध्यम से हासिल की जा सकती थी। ये तर्क हड़प्पा राजनीतिक व्यवस्था को एक बहुत ही साधारण संगठन के रूप में देखने का प्रयास करते हैं। फेयरसर्विस ने शहरों को विनियमित करने वाले गांव जैसे प्राधिकरण की भी वकालत की है।

एम. केनोअर (2006) ने हड़प्पा वासियों में राज्य-स्तर और मुखियातंत्र-स्तर, दोनों प्रकार की राजव्यवस्थाओं की मौजूदगी के लिए तर्क दिया है, जिसमें बड़ी बस्तियाँ राज्य-स्तर पर और सुदूर क्षेत्रों में छोटी बस्तियाँ मुखियातंत्र-स्तर पर संगठित थीं। वह आगे तर्क देते हैं कि हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, राखीगढ़ी और गन्वेरीवाला जैसी शहरी बस्तियाँ स्वतंत्र नगर-राज्य हो सकते थे, जिनमें कई शहरी अभिजात वर्ग सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे थे।

जे. जेकबसन (1986) ने हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न पहलुओं का सर्वेक्षण किया और यह निष्कर्ष निकाला कि सभ्यता ''सामाजिक-सांस्कृतिक एकीकरण के राज्य स्तर'' को प्रदर्शित करती है जैसा कि एक विस्तृत क्षेत्र में व्याप्त सांस्कृतिक और शायद भाषाई एकरूपता, शहरी योजना के मानकीकरण तथा अन्य तथ्यों से परिलक्षित होता है। हालाँकि, राजव्यवस्था के संदर्भ में यह सभ्यता एक प्रारंभिक राज्य स्तर पर हो सकती है जैसा कि इसके कमज़ोर सैन्य घटक और स्तरीकरण के अशक्त स्तरों से देखा गया है।

अंत में हम कह सकते हैं कि हड़प्पा सभ्यता में कोई न कोई राजनीतिक सत्ता/राजव्यवस्था अवश्य मौजूद थी जो मेसोपोटामिया या मिस्र के राजतंत्र से भिन्न थी। संचार प्रणालियाँ, कलाकृतियों का मानकीकरण, स्थल विशेषज्ञता, सार्वजनिक कार्यों के लिए श्रम जुटाना, लेखन की सामान्य प्रणाली का उपयोग, सांस्कृतिक समरूपता और शोरतुघई जैसी व्यापारिक सीमा-चौकियों (trading out posts) की स्थापना – ये सभी तत्व जटिलता के एक स्तर का संकेत देते हैं जो किसी प्रकार की राजनीतिक सत्ता के बिना संभव नहीं हो सकती थी।

6.10 धर्म

हड़प्पा धर्म की एक प्रारंभिक समझ जॉन मार्शल द्वारा प्रस्तुत की गई थी। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर उन्होंने हड़प्पा धर्म और बाद के हिंदू धर्म के बीच कई समानताएं देखीं। मुहरों से एक की पहचान उनके द्वारा 'आद्य-शिव' मुहर के रूप में की गई (चित्र 6.12)।

चित्र 6.12: 'आद्य-शिव' की मुहर। स्रोत विकिमीडिया कॉमन्स। (http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00routesdata/bce_500back/indusvalley/protoshiva/protoshiva.jpg)।

इस मुहर में मंच पर बैठी एक पुरुष की आकृति अंकित है। उसकी एड़ियां जुड़ी हुई हैं और पैर के अंगूठे नीचे की ओर मुड़े हैं। उसकी दोनों भुजाएँ चूड़ियों से ढकी हुई हैं और घुटनों पर टिकी हुई हैं। यह मुद्रा *योग* में *मूलबंधासन* के समान है। ऐतिहासिक शिव को *योग* से जुड़ा माना गया है और उन्हें *महायोगी* के रूप में जाना जाता था। आकृति छह जानवरों से घिरी हुई है : हाथी, गैंडा, भैंस, बाघ और दो मृग (Ibexes/Antelopes)। इस आधार पर उनकी जानवरों के भगवान या 'पशुपति' के रूप में व्याख्या की जा सकती है (मार्शल, 1931)। उनके आसन के नीचे दो जानवरों को आईबैक्स (Ibex) या मृगों के रूप में पहचाना गया है। यह आकृति तीनमुखी है, जो बाद में शिव के कुछ चित्रणों के समान है।

अन्य साक्ष्य जो शिव के अस्तित्व का समर्थन करने के लिए सामने लाए जा सकते हैं वे मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से प्राप्त बेलनाकार पत्थर हैं जिन्हें *शिव-लिंग* के रूप में देखा जा सकता है। हालाँकि *आद्य-शिव* के सिद्धांत पर मतभेद हैं।

इस पुरुष देवता की उपस्थिति के अलावा मार्शल ने सिंधु सभ्यता में मातृ-देवी की पूजा की उपस्थिति को रेखांकित किया। दो प्रकार के आंकड़े उपलब्ध हैंः मुहरें और लघु-मूर्तियाँ। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में खोजी गई कई स्त्री लघु-मूर्तियों में मार्शल ने पंखे के आकार की केश-सज्जा से सुशोभित, मनकों का हार और छोटी स्कर्ट (skirt) पहने एक स्त्री की कलाकृति को मातृ-देवी बताया है। यह लघुमूर्ति अन्य प्राचीन संस्कृतियों में पाए जाने वाली लघुमूर्तियों के समान है। यह मातृ-देवी या प्रकृति-देवी का प्रतिनिधित्व करती है। स्त्री की ऐसी मूर्तियों को ज़्यादातर पाकिस्तान की तरफ़ के स्थलों में पाया गया है। भारत की तरफ, हम हरियाणा में बनावली के बारे में सोच सकते हैं जहाँ बड़ी संख्या में इन मूर्तियों को प्राप्त किया गया है (अलेक्ज़ेंड्रा अर्देलियनु-जेनसन की पुस्तक में बिष्ट और अस्थाना द्वारा इस बात का हवाला दिया गया है)। इससे पता चलता है कि मातृ-देवी पंथ कुछ क्षेत्रों में लोकप्रिय था। कालीबंगन, लोथल और बनावली जैसे स्थलों में अग्नि वेदियों के प्रमाण हैं। यह कम से कम कुछ हड़प्पा शहरों में बलि अनुष्ठान के अस्तित्व की ओर संकेत देता है।

हड़प्पावासी पीपल के वृक्षों की भी पूजा करते होंगे। एक मुहर में इस पेड़ को नमन करती सात आकृतियों को दर्शाया गया है। सींग वाला एक पशु इस पेड़ पर खड़ा है। कुछ विद्वानों का तर्क है कि यह दृश्य बाद की *सप्तमातृकाओं* का स्मरण कराता है। कुछ लोग *सप्त-ऋषियों* के रूप में भी इन आकृतियों की पहचान करते हैं। लेकिन कुछ भी निश्चित नहीं कहा जा सकता है।

वास्तुकला के क्षेत्र में, बहुत कम इमारतों की पहचान मंदिरों के रूप में की गई है। हड़प्पा वासियों की अंत्येष्टि प्रथा बहुत भिन्नता दर्शाती है। शवदहन-क्रिया और दफनाने की क्रिया, दोनों ज्ञात थे। जबकि मोहनजोदड़ो जैसे कुछ स्थलों में बस्ती के भीतर कब्रें थीं, हड़प्पा, कालीबंगन, धोलावीरा और हाल ही में राखीगढ़ी में बस्ती से अलग कब्रिस्तान पाए गए हैं। हाल की खुदाई में धोलावीरा और राखीगढ़ी से अनोखी कब्रों की खोज की गई है। धोलावीरा में महापाषाण (Megaliths) के कुछ सबूत हैं, लेकिन ये ज़्यादातर प्रतीकात्मक कब्रें हैं (बिष्ट, 2011)। राखीगढ़ी में एक अनूठी विशेषता यह है कि कब्रिस्तान में महिला कब्रों में अक्सर पुरुष कब्रों की तुलना में अधिक दफनाने वाले सामान (burial goods) होते थे।

बोध प्रश्न 2

1) हड़प्पा बस्तियों की वास्तुकला की विशेषताओं और जल निकासी पर चर्चा करें।
2) हड़प्पा धर्म के प्रमुख तत्व क्या हैं?
3) हड़प्पा वासियों की अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें।
4) निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
   i) शिव सबसे महत्वपूर्ण हड़प्पा भगवान प्रतीत होते हैं। ( )
   ii) हड़प्पा की धार्मिक वस्तुओं में महिला देवीयाँ अनुपस्थित थीं। ( )
   iii) लगता है कि वृक्षों की भी पूजा हड़प्पावासी करते थे। ( )
   iv) हड़प्पा वासियों द्वारा किसी भी पशु की पूजा नहीं की जाती थी। ( )

6.11 सारांश

यह संक्षेप में परिपक्व हड़प्पा चरण के समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था का अवलोकन है। सभ्यता का विस्तार क्षेत्र बहुत विस्तृत है। हड़प्पावासी लगभग 500 वर्षों तक उल्लेखनीय एकरूपता बनाए रखने में सक्षम रहे। हालांकि उन्होंने विभिन्न जीवन-निर्वाह प्रारूपों, भोजन की आदतों, शिल्प परंपराओं, धार्मिक मान्यताओं, सांस्कृतिक प्रथाओं और सामाजिक रीति-रिवाजों का पालन किया।

परिपक्व हड़प्पा चरण को शहरीकरण से विशेषित किया गया है। शिल्प, अर्थव्यवस्था, व्यापार, धातु कर्म, कला के क्षेत्र में हम पूर्ववर्ती स्तरों से गहनता को देखते हैं। बस्तियों को उनकी सार्वजनिक वास्तुकला, जल-निकासी पद्धति, नगर-दुर्ग और निचले शहर के रूप में बस्ती के विभाजन, किलाबंदी की दीवारों, अन्न-कोठारों, कुओं, सड़कों, मल-निष्कासन प्रणाली, मृदभांडों और शिल्प वस्तुओं के लिए जाना जाता है। 1800 बी.सी.ई. से हम पुरातात्विक आंकड़ों में बदलाव को देखते हैं। शहरी चरण पूरी तरह से समाप्त हो गया था। कालीबंगन और बनावली जैसे कुछ स्थलों को पूरी तरह त्याग दिया गया था। छोटी और कम समृद्ध संस्कृतियों को परवर्ती हड़प्पा के रूप में नामित किया गया है। अगली इकाई में इस चरण के अधिक विवरण एवं विश्लेषण के साथ-साथ हम हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारणों का अध्ययन करेंगे।

6.12 शब्दावली

दुर्गप्राचीर (Bailey) : दुर्ग/गढ़ से संलगन किलाबन्द आंगन।

मुखियातंत्र/प्रारंभिक राज्य : यह जनजाति के बाद के अगले स्तर का प्रतिनिधित्व करता है। स्थायी आवास, अधिक जनसंख्या और विशेषज्ञता इस चरण की विशेषताएं हैं। इसमें एक मुखिया नेतृत्व करता है जो अपने आदिवासी समकक्ष की तुलना में बहुत अधिक शक्तिशाली होता है। इस राजनीतिक व्यवस्था में एकमात्र तत्व जो नामौजूद है वह है सामाजिक स्तरीकरण।

किलाबंद/किलाबंदी : एक दीवार से घिरा हुआ।

भ्रष्ट मोम प्रक्रम (Lost Wax Process) : यह धातु को आकार देने की प्रक्रिया है जिसमें पिघली हुई धातु को मोम से बने वांछित सांचे में डाला जाता है। धातु के ठोस होने के बाद मोम पिघला दिया जाता है।

महापाषाण (Megalith) : इस संज्ञा में दो शब्द शामिल हैं : 'Mega' अर्थात बड़ा और 'Lith' अर्थात पत्थर। विश्व भर में कई संस्कृतियों में मृतकों को अक्सर पत्थर की विशाल पटिया (slab) से बने स्मारकों में दफनाया जाता था।

खंदक : किसी इमारत की रक्षा के लिए उसके चारों ओर बनाया गया एक कृत्रिम जल निकाय।

शमन (Shaman) : एक व्यक्ति जो अवचेतन/मुर्छा (trance) के माध्यम से शक्तियों को प्राप्त करता है। वे दूसरी दुनिया के साथ संपर्क स्थापित कर सकते हैं और स्वास्थ्यप्राद/रोग हरनेवाली शक्तियों के अधिकारी होते हैं।

ग़रकी (Sinking) : इसे Doming के नाम से भी जाना जाता है। यह धातु कर्म में उपयोग की जाने वाली एक तकनीक है जिसके द्वारा किसी धातु को वांछित आकार दिया जाता है।

राज्य : राज्य एक अधिक जटिल इकाई है। घनी आबादी और उच्च स्तर का अधिशेष इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं। अधिशेष तक पहुंच समाज में स्थिति, पद अथवा श्रेणी पर निर्भर करती है। इसमें श्रम का अधिक विभाजन और सामाजिक स्तरीकरण होता है। शासक की शक्ति निरंकुश/परम होती है।

आदिवासी समाज : यह एक बहुत ही सरल समाज है जिसमें परिवार समूहों का एक संग्रह होता है। इसमें कृषि और शिकार पर निर्भर एक सरल अर्थव्यवस्था होती है और छोटे पैमाने पर शिल्प उत्पादन होता है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

6.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) – घ) ii) – क) iii) – ख) iv) – ग)

2) भाग 6.4 देखें।

3) उपभाग 6.4.6 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) कृपया भाग 6.4 और इसके उपभाग तथा भाग 6.6 देखें।

2) भाग 6.10 देखें।

3) भाग 6.5 देखें।

4) i और iii

6.14 संदर्भ ग्रंथ

ऑल्चिन, बी. और ऑल्चिन, एफ़. आर. (1997). *औरिजिन्स ऑफ़ ए सिविलाइज़ेशन : द प्रीहिस्ट्री एंड अर्ली आर्कियोलॉजी ऑफ साउथ एशिया.* वाइकिंग एडल्ट।

चक्रबर्ती, डी. के. (1999). *इंडिया : ऐन आर्कियोलॉजिकल हिस्ट्री.* ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

चक्रबर्ती, डी. के. (2006). *द ऑक्सफ़र्ड कम्पैनियन टू इंडियन आर्कियोलॉजी.* ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

मार्शल, जॉन (1931). *मोहनजादड़ो एंड द इंडस सिविलाइज़ेशन.* खंड 1. लंदन : आर्थर प्रोबस्थाइन।

पोश्हैल, जी. (2003). *द इंडस सिविलाइज़ेशन : ए कंटम्पोररी परस्पैक्टिव.* न्यू यॉर्क : अल्ता मिरा प्रेस।

रत्नागर, एस. (2016). *हड़प्पन आर्कियोलॉजी : अर्ली स्टेट परस्पैक्टिव्स.* दिल्ली : प्राइमस बुक्स।